कहा भयो जो मुखथें कह्यो

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक।।

मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार।।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें, गुन अंग इंद्री से होत रहित।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत।।

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।।

देखन को हम आए री दुनियाँ, हमहीं कारन कियो ए संच।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बैठे देखे प्रपंच।।

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी।
दुख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।।